Toppersnotes
Unleash the topper in you

# P.T.I.

## शारीरिक शिक्षा अध्यापक

### 2ND GRADE / 3RD GRADE

प्रथम – प्रश्न पत्र

भाग – 2

## सामान्य अध्ययन (राजस्थान)

SIERRA INNOVATIONS

# RPSC 2ND GRADE – 2022

## सामान्य अध्ययन (राजस्थान)


| क्र.सं. | अध्याय | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| 1. | राजस्थान में चौहान वंश | 1 |
| 2. | राजस्थान एवं मुगल साम्राज्य | 8 |
| 3. | राजस्थान में 1857 की क्रांति | 16 |
| 4. | राजस्थान में किसान आंदोलन | 21 |
| 5. | राजस्थान में राजनीतिक जनजागरण | 29 |
| 6. | राजस्थान के स्वतंत्रता सेनानी | 33 |
| 7. | राजस्थान का एकीकरण | 42 |
| 8. | राजस्थान में प्रजामण्डल | 47 |
| 9. | राजस्थान के लोक देवता | 53 |
| 10. | राजस्थान की लोक देवियाँ | 67 |
| 11. | राजस्थान के लोक संत | 73 |
| 12. | राजस्थान के प्रमुख सम्प्रदाय | 79 |
| 13. | राजस्थान के त्योहार | 81 |
| 14. | राजस्थान की सामाजिक प्रथाएँ एवं रीति-रिवाज | 93 |
| 15. | आभूषण, वेशभूषा व खान-पान | 96 |
| 16. | राजस्थान के प्रमुख लोकगीत | 100 |
| 17. | राजस्थान की लोक गायन शैलियाँ | 102 |
| 18. | राजस्थान के संगीत घराने | 103 |
| 19. | राजस्थान के लोक नृत्य | 105 |
| 20. | राजस्थान के लोक नाट्य | 112 |
| 21. | राजस्थान की चित्रकला | 117 |
| 22. | राजस्थान की हस्तकला एवं लोक कलाएँ | 127 |

| | | |
|---|---|---|
| 23. | राजस्थान का साहित्य | 142 |
| 24. | राजस्थान की प्रमुख बालियाँ | 149 |
| 25. | राजस्थान में प्रमुख साहित्य, कला एवं संगीत संस्थान | 151 |
| 26. | स्थानीय स्वशासन (पंचायती राज व नगरीय शासन व्यवस्था) | 154 |
| 27. | राज्यपाल | 160 |
| 28. | मुख्यमंत्री | 164 |
| 29. | विधानसभा | 166 |
| 30. | राज्य की राजनीति | 174 |
| 31. | राज्य मंत्रीपरिषद् | 180 |
| 32. | मुख्य सचिव | 182 |
| 33. | राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC) | 186 |
| 34. | राजस्थान राज्य मानवाधिकार आयोग | 189 |

# 1- राजस्थान में चौहान वंश

## हर्षनाथ का अभिलेख

चौहान साम्राज्य की प्रारम्भिक या प्राचीनतम राजधानी अन्तत गोचर प्रदेश (अनन्तपुर) सीकर थी।

## हम्मीर महाकाव्य – (नयनचन्द्र सूरि)

चौहान राजवंश का प्रारम्भिक शासन पुष्कर के आसपास था – ''सुर्जनचरित'' – चन्द्रशेखर

## चौहान राजवंश की उत्पत्ति

1. अग्नि कुण्ड सिद्धान्त से समर्थन करने
1. चन्द्रबरदाई ने पृथ्वीराज रासो ग्रन्थ में की है।
2. मुहणोत नैणसी
3. सूर्यमल मिश्रण

## बिजौलिया शिलालेख [2nd Grade 1st Paper - 2018]

- चौहान राजवंश का मूल स्थान – सपादलक्ष क्षेत्र या (सांभर के आस–पास)
- वासुदेव ने चौहान वंश की 551 ई. में नींव रखी।
- 1170 ई. सोमेश्वर से सम्बन्धित है।
- इस शिलालेख के अनुसार चौहानों को वत्सगोत्रिम ब्राह्मण से हुई है।
- इसकी पुष्टि से दशरथ शर्मा ने चौहानों की उत्पत्ति ब्राह्मणों से बताई है।
- कर्नल जेम्स टॉड़ – चौहानों को विदेशी जाति का बताया है।
- इस बात का समर्थन – विलियन कुर्क व डॉ. स्मिथ ने किया।

**चौहान राजवंश**

| | |
|---|---|
| इन्द्रवंशी/इन्द्र के वंशज | सूर्यवंशी |
| (रायपुर का सेवाड़ी अभिलेख) | पृथ्वीराज रासो |
| चन्द्रवंशी | पं. गौरी शंकर ओझा |
| 1171 ई. हांसी शिलालेख | हम्मीर महाकाव्य |
| अचलेश्वर मन्दिर का लेख | चौहान प्रशस्ति |
| माउण्ट आबू में चन्द्रावती के चौहानों | सुर्जन चरित |
| का यह लेख है। | पृथ्वीराज तृतीय के बेदला अभिलेख |

- सुन्धा माता अभिलेख में चौहानों की उत्पत्ति महर्षि वशिष्ठ की आँख से मानी है।
- आबू पर्वत पर गुरू वशिष्ठ द्वारा यज्ञ करवाया इस यज्ञ से चौहानों की उत्पत्ति है।
- इस यज्ञ से – प्रतिहार, परमार, चालुक्य, चौहान उत्पन्न हुए है।

## शाकम्भरी या सांभर के चौहान

- चौहानों का आदिपुरूष/मूल पुरूष व संस्थापक वासुदेव चौहान को मानते है।
- 551 ई. में वासुदेव ने सांभर में चौहानों की नींव रखी थी ।

- वासुदेव ने सांभर झील का निर्माण करवाया इस बात का उल्लेख बिजौलिया शिलालेख से प्राप्त होता है। (1170 ई.) **[2nd Grade 1st Paper - 2018]**
- वासुदेव ने चौहानों की प्रथम राजधानी अहिछत्रपुर रखी थी ।
- बिजौलिया शिलालेख व राजशेखर के प्रबन्धकोष में चौहानों का मूल स्थान सांभर, सपादलक्ष बताया गया था व संस्थापक वासुदेव चौहान थे।
- वासुदेव चौहान ने शाकम्भरी माता के मन्दिर का निर्माण शाकम्भरी (जयपुर) में करवाया।
- यह माता चौहानों की कुलदेवी है।

## गुवक प्रथम

- इनके काल में हर्षनाथ मन्दिर (हर्ष की पहाड़ी सीकर) को निर्माण हुआ।
- यह चौहान वंश का कुल देवता है।
- वाक्पतिराज प्रथम – हर्षनाथ मंदिर के अभिलेख में इनको महाराज की उपाधि दी गई है।

## सिंहराज

- प्रतिहारों को हराया था।
- प्रथम स्वतंत्र चौहान शासक है।

## विग्रहराज द्वितीय

- प्रारम्भिक चौहानों में सबसे प्रतापी शासक थे।
- गुजरात के चालुक्य वंश मूलराज प्रथम को हराया।
- आशापुरा माता के मन्दिर का निर्माण–भड़ौच (गुजरात)
- हर्षनाथ प्रशस्ति में इनके बारें में जानकारी मिलती है।
- प्रतिहारो से स्वतंत्र होकर अपनी स्वतंत्र सत्ता स्थापित की।

## अजयराज – 1105 ई. से 1133 ई.

- अजयराज ने 1113 ई. में अजमेर शहर बसाया था। (पृथ्वीराज विजय के अनुसार)
- चौहानों की राजधानी अजमेर को बनाई थी ।
- डॉ. गोपीनाथ शर्मा के अनुसार अजयराज का काल चौहान साम्राज्य का निर्माणकाल माना जाता है।
- अजयराज ने अजमेर में सोने व चाँदी के सिक्के चलाये थे अजयप्रिय व द्रूम्स नाम के सिक्के चलाये थे, इस सिक्कों पर अजयराज की पत्नी सोमलवती का चित्र अंकित हैं जो चांदी के सिक्के है।
- अजयराज ने अजमेर में एक टकशाल भी स्थापित करवाई थी।
- पृथ्वीराज विजय के अनुसार अजयराज ने मालवा के शासक नरवर्मन के सेनापति सुल्हण को व तुर्क सुल्तान शहाबुद्दीन को परास्त कर दिया था।
- अजयराज ने अन्हिलपाटन के चालुक्य शासक मूलराज द्वितीय को पराजित किया था।
- अजयराज ने अजमेर में गढ़बिठली की पहाड़ी पर अजयमेरू दुर्ग का निर्माण करवाया, जिसे तारागढ़ दुर्ग भी कहते है।
- अजयराज ने स्वयं अपने पुत्र के पक्ष में सिंहासन त्याग कर जीवन के अन्तिम दिनों में पुष्कर में तपस्या कर व्यतीत किये थे ।

## अर्णोराज/आना जी – 1133 ई. से 1155 ई. [2nd Grade 1st Paper - 2016]

- आना जी ने 1133 ई. में अजमेर में शासन सम्भाला था।
- आना जी ने तुर्क आक्रमणकारियों को बुरी तरह हराकर तुर्कों को सेना के संहार के बाद खुन से रंगी धरती को साफ करने के लिए चन्द्रा नदी के जल को रोककर अनासागर झील का निर्माण करवाया था।
- इस झील में बाण्ड़ी नदी का जल भी गिरता है।
- बिजौलिया शिलालेख के अनुसार यह झील 1133 ई. से 1137 ई. के मध्य व पृथ्वीराज रासो के अनुसार 1135 ई. से 1137 ई. के मध्य बनवायी थी।
- आना जी शेव धर्म के अनुयायी थे।
- आना जी ने पुष्कर में विष्णु के वराहमन्दिर का निर्माण करवाया व वराह मन्दिर का जिर्णोद्धार समरसिंह ने करवाया था वराह मन्दिर की विष्णु मूर्ति को जहाँगीर ने पानी में फेंकवा दी थी।
- आना जी के दरबार में देवबोध व धर्मघोष साहित्यकार रहते थे।
- आना जी के 4 पुत्र थे इनमें से सबसे बड़े पुत्र जगदेव ने आना जी की हत्या कर दी थी, अतः जगदेव चौहान वंश का प्रथम पित्र हंत्ता शासक है।
- 'प्रबन्ध चिन्तामणी' व प्रबन्ध कोष में यह जानकारी मिलती है – चालुक्य शासक कुमारपाल का आनाजी के साथ आबू के निकट युद्ध हुआ, जिसमें विजय कुमारपाल की हुई थी।
- चालुक्य शासक सिद्धराज जयसिंह ने आना जी के साथ राज्य की सीमा को लेकर विवाद किया जिसमें विजय आना जी हुआ व सिद्धराज जयसिंह ने अपनी पुत्री कांचन देवी का विवाह आना जी से किया था।
- कुमारपाल से विवाद समाप्त करने हेतु आना जी अपनी पुत्री जल्हण का विवाह कुमारपाल से कर विवाद समाप्त किया था।

### उपाधियाँ

**परमेश्वर, महाराजधिराज, परमभट्टारक**

## विग्रहराज चतुर्थ (बीसलदेव – 1158 ई. से 1163 ई.) [2nd Grade 1st Paper - 2016]

बीसलदेव का काल **''कला व साहित्य''** की दृष्टि से चौहानों का **स्वर्णकाल कहलाया** था।''

- विग्रहराज ने 1163 ई. में दिल्ली में शिवालिक स्तंभ लेख का निर्माण करवाया। इस अभिलेख में विग्रहराज को **'विष्णु का अवतार'** बताया था।
- विग्रहराज कवियों व विद्वानों का आश्रयदाता था, अतः इसके दरबारी कवि जयानक (कश्मीरी पण्ड़ित) ने इसे **''कवि बान्धव''** की उपाधि दी थी।
- विग्रहराज ने दिल्ली के तोमर शासकों को हराकर दिल्ली पर विजय प्राप्त करने वाला चौहानों का प्रथम शासक था। (बिजौलिया शिलालेख के अनुसार)
- दिल्ली को चौहानों की राजधानी बनायी थी।
- विग्रहराज ने जैन विद्वान धर्मघोषसुरी के मार्गदर्शन से पशु हत्या पर रोक लगवायी थी।
- विग्रहराज ने गजनी के शासक खुशरूशाह को हराकर हिन्दू राजाओं को गजनी शासक से मुक्ति दिलवायी थी।
- विग्रहराज ने अजमेर में सरस्वती मन्दिर का निर्माण करवाया।

- किलहार्न ने विग्रहराज के लिए कहा की यह पहला हिन्दू शासक है, जो कालीदास और भवभूती की होड़ कर सकता है।
- विग्रहराज ने टोंक में बीसलपुर बाँध का निर्माण करवाया था, जो राजस्थान में पेयजल की दृष्टि से सबसे बड़ी परियोजना हैं।
- विग्रहराज संस्कृत भाषा का विद्वान कवि था।
- विग्रहराज ने संस्कृत भाषा में 'हरिकेली नाटक' की रचना की थी। **[2nd Grade 1st Paper - 2019]**
- विग्रहराज का दरबारी कवि सोमदेव भी था, सोमदेव ने **ललित विग्रह राज** की रचना की थी, इस ग्रन्थ में विग्रहराज व इन्द्र की राजकुमारी जैसलदे का प्रेम वर्णन हैं। **[2nd Grade 1st Paper - 2018]**
- सोमदेव ने विग्रहराज चतुर्थ को 'विद्वानों में सर्वप्रथम – विपश्चितानामाघः कहा है।
- बीसलदेव रासौ ग्रन्थ का लेखक नरपति नाल्ह था, इस ग्रन्थ में विग्रहराज व राजाभोज की राजकुमारी राजमति का प्रेम वर्णन मिलता है।
- विग्रहराज ने अजमेर में संस्कृत पाठशाला का निर्माण करवाया जिसे 'सरस्वती कण्ठाभरण' कहते थे।
- शिहाबुद्दीन मोहम्मद गौरी के गुलाम कुतुबद्दीन ऐबक ने इस संस्कृत पाठशाला को तुड़वा कर अढ़ाई दिन के झोपड़े का निर्माण करवाया था और इस पर फारसी भाषा में अभिलेख लिखवाये थे। अतः राजस्थान में प्रमुखतः फारसी अभिलेख यहीं से प्राप्त होते है।
- अढ़ाई दिन झोपड़े का डिजाइनर – अबु बकर था।
- जॉन मार्शल ने इसे सबसे पहले अढ़ाई दिन का झोपड़ा कहा था।
- पर्सी ब्राउन के अनुसार इस मस्जिद के पास पंजाब शाह का अढ़ाई दिन का उर्स लगता था, इस कारण इसे अढ़ाई दिन का झोपड़ा कहा था।
- फारसी इतिहासकारों के अनुसार यह 48 घण्टे में बनकर तैयार हो गया था, अतः इसे अढ़ाई दिन का झोपड़ा कहते है।
- कर्नल जेम्स टॉड ने अढ़ाई दिन के झोपड़े के लिए कहा कि इस प्रकार की प्राचीन व सुरक्षित इमारत आज तक मैनें राजस्थान में नहीं देखी है।
- यह राजस्थान के 16 खम्भों की पहली मस्जिद हैं।
- यह राजस्थान में निर्मित प्रथम मस्जिद है।
- हरिकेली नाटक की कुछ पंक्तियाँ ब्रिटेन के ब्रिस्टल शहर मे राजा राम मोहनराय की समाधि स्थल पर खुदी हुई है।

## सोमेश्वर चौहान – 1169 ई. से 1177 ई.

पिता – अर्णोराज

माता – कांचन देवी

- यह शासक बनने से पहले गुजरात के जयसोम व कुमारपाल का दरबारी कवि था।
- सोमेश्वर ने कोंकण के शासक मल्लिकार्जुन की हत्या की थी।
- इसका विवाह कलच्यूरी के शासक की पुत्री कर्पूरी देवी से हुआ।
- 1177 ई. में सोमेश्वर ने आबू के जैतसिंह का पक्ष लेते हुए गुजरात के चालुक्य वंशज भीमसिंह द्वितीय पर आक्रमण किया। भीमसिंह द्वितीय ने सोमेश्वर की हत्या कर दी।

## पृथ्वीराज चौहान तृतीय

- इसका जन्म – अन्हिलपाटन, (गुजरात)
- 1166 ई. (वि.सं. 1223 ज्येष्ठ मास द्वादशी)
- पिता – सोमेश्वर
- माता – कर्पूरी देवी
- सेनाध्यक्ष – भुवनेकमल/भुवन्नमल
- प्रधानमंत्री – कैमास/कदम्ब दास
- इसका राज्याभिषेक 11वर्ष की आयु में 1177 ई. में हुआ था।
- अल्पवयस्क होने के कारण प्रधान मंत्री कैमास व सेनाध्यक्ष भुवनेकमल ने शासन व्यवस्था सम्भाली थी।
- पृथ्वीराज तृतीय के पिता–सोमेश्वर व माता कर्पूरी देवी है यह पृथ्वीराज विजय के अनुसार है। पृथ्वीराज तृतीय के उपनाम– **भारतेश्वर, हिन्दूसम्राट, सपादलक्षेश्वर, दलपूंगल व विश्वविजेता व रायपिथौरा है।**
- रायपिथौरा का शाब्दिक अर्थ :– युद्ध में पीठ न दिखाने वाला।
- 1178 ई. में सबसे पहले अपने चचेरे भाई नागार्जुन का विद्रोह गुडगाँव में हुआ, जिसमें विजय पृथ्वीराज तृतीय की हुई।
- 1178 ई. में पृथ्वीराज तृतीय ने शासन अपने हाथ में ले लिया।
- 1182 ई. में सतलज प्रदेश से आने वाली भण्डानक जाति जो अलवर – भरतपुर व मथुरा क्षेत्र में अपना प्रभाव जमाना चाहती थी। जिसका दमन किया गया।
- 1182 ई. में बुंदेलखण्ड़/जैजाक भुक्ति/महोबा के चन्देल राज परमार्दी देव व उनके सेनापति आल्ह व उदल को तुमुल के युद्ध में हराकर राजधानी महोबा पर अधिकार कर पन्जुनराय को महोबा का अधिकारी नियुक्त किया था। **[2nd Grade 1st Paper - 2013]**
- 1184 ई. में नागौर के युद्ध में गुजरात के शासक भीमदेव के साथ चल रहे संघर्ष को समाप्त कर सन्धि कर ली थी।
- पृथ्वीराज तृतीय ने दिल्ली के लालकोट शहर में 'रायपिथौरगढ़' का निर्माण करवाया था ।
- पृथ्वीराज तृतीय ने विद्वानों को प्रोत्साहित करने के लिए अजमेर में **'कला साहित्य विभाग'** की स्थापना की जिसका प्रथम अध्यक्ष्य पद्मनाभ था।
- पृथ्वीराज तृतीय के दरबार में श्रेष्ठ विद्वानों का आश्रय पाया जाता है। वागीश्वर, विधापति गौड़, जनार्दन, विश्वरूप, पृथ्वी भट्ट, चन्द्रबरदाई व जयानक भट्ट आदि थे।
- कश्मीरी पण्ड़ित जयानक ने पुष्कर झील के किनारे बैठकर पृथ्वीराज विजय ग्रन्थ की रचना की जिसमें तराइन के दोनों युद्धों का वर्णन नही है।
- जयानक, बीसलदेव, सोमेश्वर ये पृथ्वीराज के दरबारी विद्वान थे।
- पृथ्वीराज तृतीय का प्रथम शिलालेख – बड़ल्या/बदल्या व अन्तिम शिलालेख आंवल्दा का शिलालेख हैं।
- कन्नौज के जयचन्द गढ़वाल को हराकर उसकी पुत्री संयोगिता के साथ अजमेर में गंधर्व विवाह किया था। इस घटना को पृथ्वीराज रासो, सुर्जन चरित, आइने–ए–अकबरी व ड़ॉ. दशरथ शर्मा सत्य मानते है। इस घटना का खण्ड़न डॉ. त्रिपाठी व गौरीशंकर ओझा करते है।
- पृथ्वीराज रासो ग्रन्थ के लेखक चन्द्रबरदाई है और इसका अन्तिम भाग इसके पुत्र जल्हण ने पूरा किया था।
- इस ग्रन्थ की सबसे प्राचीन प्रति–बीकानेर पुस्तकालय में मिली है। यह ग्रन्थ पिंगल भाषा में लिखा हुआ है जो राजस्थान की ब्रज भाषा का पर्याय है।

- पृथ्वीराज रासो को हिन्दी का प्रथम महाकाव्य होने का सम्मान प्राप्त है।
- इसमें 10 हजार छंद, 6 भाषा, 2500 पृष्ठ, व 69 अध्याय है।
- चन्द्रबरदाई की बेटी का नाम – राजबाई है।
- चन्द्रबरदाई ने 36 राजपूत राजवंशों की सूची दी है।
- दिल्ली का शासक अन्नंगपाल पृथ्वीराज तृतीय के नाना थे जिसने दिल्ली का शासन पृथ्वीराज को सौंप दिया था।
- तराइन का प्रथम युद्ध :– 1191 ई. में
- तराइन का मैदान करनाल हरियाणा में है।
- पृथ्वीराज तृतीय V/s मुहम्मद गौरी
- विजय – पृथ्वीराज तृतीय
- इस युद्ध में पृथ्वीराज का सेनापति – खाण्डेराव था ।
- इस युद्ध में पृथ्वीराज का साथ – दिल्ली गर्वनर – गोविन्दराज ने दिया था।
- गौरी ने सरहिन्द / तवरहिन्द बहीण्ड़ दुर्ग काजी जियाद्दीन से छीन से छीन्न उसे अजमेर ले आया ।
- तराइन का दूसरा युद्ध – 1192 ई.
- पृथ्वीराज तृतीय V/s गौरी
- विजय – गौरी
- इस युद्ध में खाण्डेराव मारा गया और पृथ्वीराज तृतीय का सेनापति – उदयशंकर
- मंत्री – सोमेश्वर व प्रतापसिंह बने थे।
- गौरी ने अपनी सेना मजबूत करने के लिए तुर्क – ताजिक और अफगान को सम्मिलित कर लाहौर व मुल्तान मार्ग से पुनः तराइन पहुँचा।
- हसन निजायी के अनुसार गौरी तराइन (लाहौर) पहुँचते ही एक दूत क्वाम उल–मुल्क को पृथ्वीराज के पास भेजा कि पृथ्वीराज इसकी अधीनता स्वीकार कर ले प्रत्युत्तर में उसे पृथ्वीराज ने गजनी लौट जाने की सलाह दी।
- इस युद्ध में पृथ्वीराज के हार का मुख्य कारण सोमेश्वर व प्रतापसिंह थे, जो गौरी से मिल गये थे।
- इस युद्ध में पृथ्वीराज का सेनापती उदयशंकर था।
- तराइन का द्वितीय युद्ध भारत में निर्णायक युद्ध साबित हुआ। इस युद्ध के बाद भारत में स्थायी रूप से मुगल साम्राज्य का संस्थापक बना व स्थायीरूप से मुगल साम्राज्य आरम्भ हुआ।
- गौरी भारत में कन्नौज, बिहार, गुजरात आदि क्षेत्रों पर अधिकार कर अपने दास कुतुबुद्दीन ऐबक को यहाँ पर शासक नियुक्त कर दिया।
- गौरी ने पृथ्वीराज के पुत्र गोविन्दराज को अजमेर का शासक बनाया, परन्तु गोविन्द के चाचा हरि राज ने विद्रोह कर अजमेर पर अधिकार कर लिया।
- तराइन के द्वितीय युद्ध के बाद भारत में राजपूत काल का अंत व दिल्ली में सल्तनत काल का उदय हुआ था।
- 1192 में गौरी के साथ–फारस। ईरान से ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती (भारत में चिश्ती सिले का संस्थापक गरीब नवाज पृथ्वीराज तृतीय के काल में अजमेर आए और अजमेर को अपनी कर्मस्थली बनाया। अजमेर में उनकी दरगाह बनी है, दरगाह के लिए जगह जयपुर शासक (जगतसिंह) ने दी थी।)
- पृथ्वीराज ने अपने जीवन में तोमरों से लड़ाई नही की।

- पृथ्वीराज रासो ग्रन्थ के अनुसार पृथ्वीराज तृतीय को गजनी ले जाया गया व नैत्रहीन कर दिया तब पृथ्वीराज ने गौरी की हत्या शब्द भेदी बाण से की थी तथा चन्द्रबरदाई व पृथ्वीराज ने आत्महत्या की थी।
- चन्द्र बरदई पृथ्वीराज का दरबारी कवि, मित्र व सहयोगी था।
- हम्मीरमहाकाव्य के अनुसार पृथ्वीराज को कैद करवा कर अन्त में मारा गया था।
- पृथ्वीराज की छतरी – काबुल (गजनी) में बनी हुई है व स्मारक तारागढ़ दुर्ग अजमेर में बना हुआ हैं।
- पृथ्वीराज ने अपने दिग्विजय अभियान के अन्तर्गत – महोबा – गुजरात व कन्नौज राज्यों के साथ युद्ध किया था ।
- इन्हीं के शासनकाल में चौहानों का साम्राज्य विस्तार अजमेर से दिल्ली तक हो गया था ।
- तराइन के युद्धों की जानकारी हमें क्रमशः चन्द्र बरदाई, पृथ्वीराज रासो, हसन निजामी–ताज–उल मासिर, मिन्हाज – उस – सिराज – तबाकत – ए – नासिरी से मिलती है।
- NCERT के तहत तराइन के 2 युद्ध, गोपीनाथ शर्मा के अनुसार – 3 बार, सुर्जन चरित ग्रन्थ के अनुसार – 21 बार, मेरूतंग की प्रबन्ध चिंतामणी में 23 बार, पृथ्वीराज प्रबन्ध में 8 बार, नयनचन्द्र सूरि के हम्मीर महाकाव्य में 7 बार गौरी को चौहान ने पराजित किया।

# 2- राजस्थान एवं मुगल साम्राज्य

## राणा सांगा

- मेवाड के शासक साँगा के समय मुगल बादशाह **बाबर काबुल** का शासक था।
- बाबर ने पानीपत के प्रथम युद्ध (20 अप्रैल 1526) में इब्राहिम लोदी को हराकर दिल्ली में मुगल शासन की स्थापना की थी।

### बयाना युद्ध

- राणा सांगा व बाबर के मध्य 16 फरवरी 1527, को हुआ जिसमें राणा सांगा विजयी रहा।
- बयाना युद्ध में बाबर का सेनापति **संगर खाँ** मारा गया।

### खानवा युद्ध 17 मार्च, 1527

- राणा सांगा ने खानवा युद्ध से पहले पाती परवन की राजपूत परम्परा को जीवित करके राजस्थान के प्रत्येक राजा को अपनी ओर से युद्ध में शामिल होने का न्यौता दिया था।
- राणा साँगा अन्तिम हिन्दू राजा थे, जिनके सेनापतित्व में सब राजपूत जातियाँ विदेशियों को भारत से निकालने के लिए एक साथ सम्मिलित हुई थी। राणा सांगा सारे राजपूताने की सेना के सेनापति बने थे।
- खानवा युद्ध में सांगा के सेनानायक दलपत सिंह, रायमल राठौड, रावत जग्गा, रावत बाघसिंह, खेतसिंह, कर्मचन्द, रतनसिंह मेंडतिया, परमार गोकुलदास, चन्द्रभान सिंह, भोपतराय, उदयसिंह, हसन खाँ मेवाती, माणिकचन्द चौहान आदि योद्धाओ ने वीरगति पायी थी।
- खानवा युद्ध में राणा सांगा के घायल हो जाने के बाद उसके सरदार अखैराज बसावा ले गये।
- राणा के राजकीय चिह्न झाला अज्जा ने धारण किये व वीरगति को प्राप्त हो गये।
- इनकी स्मृति में इनके वंशजो को (सादड़ी के राजराणाओं) को महाराणा के समस्त राजचिह्न धारण करने का अधिकार प्रदान किया।
- कालपी के पास इरिच गाँव मे उसके साथी राजपूतो ने विष दे दिया जिससे राणा सांगा की 30 जनवरी 1528 को मृत्यु हो गयी।
- माण्डलगढ़ में उनकी समाधि व छतरी बनी हुई है।

  **नोट** – श्यामलदास की पुस्तक ''वीर विनोद'' के अनुसार यह युद्ध 16 मार्च, 1527 को हुआ।

### राणा सांगा व बाबर के मध्य युद्ध के कारण

- दोनों ही राजाओ का अत्यधिक महत्वाकांक्षी एवं राज्य विस्तार के लिए प्रयासरत होना।
- बाबर व सांगा ने इब्राहिम लोदी पर आक्रमण करने के लिए संधि की थी, परन्तु युद्ध के समय सांगा द्वारा कोई सहायता नहीं करने पर बाबर ने संधि का उल्लंघन बताया व आक्रमण किया।
- अफगान सेनापति हसन खाँ मेवाती को शरण देना भी युद्ध का कारण था।
- बयाना दुर्ग राजस्थान के प्रवेश द्वार पर स्थित होने के कारण अत्यधिक सामरिक महत्व का दुर्ग था, जिस पर सांगा एवं बाबर दोनों अधिकार चाहते थे।

### सांगा की पराजय के कारण

- सांगा ने प्रथम विजय के बाद तुरन्त युद्ध नहीं करके बाबर को युद्ध तैयारी का समय देना।
- सांगा की युद्ध तकनीक पुरानी होना।
- बाबर की युद्ध पद्धति तुलुगमा से सांगा के सैनिकों का अनभिज्ञ होना।
- राजपूत सैनिक रायसीन के सलहदी तंवर व नागौर के खानजादा द्वारा सांगा के साथ विश्वासघात करना।
- बाबर द्वारा तोपों व बंदूकों का प्रयोग करना।

  **नोट**– राणा सांगा को अन्तिम भारतीय हिन्दू सम्राट कहा जाता है।

- राणा सांगा की पत्नी श्रृंगार देवी (जोधपुर के राजा रावा जोधा की पुत्री थी) ने घोसुण्डी बावडी का निर्माण करवाया था, जिसमें घोसुण्डी शिलालेख खुदवाया।
- बाबर ने आत्मकथा तुजुके बाबरी में लिखा कि सांगा का राज्य 10 करोड़ आमदनी व उसकी सेना में 1 लाख सैनिक सवार थे। सांगा के साथ 7 राजा, 9 राव, 104 छोटे सरदार रहते थे।
- **कर्नल टॉड ने सांगा को सिपाही का अंश** (भग्नावेश) कहा।

## महाराणा प्रताप (1572–1597 ई.) एवं अकबर

- प्रताप का जन्म 9 मई, 1540 को कुम्भलगढ़ में बने कटारगढ के बादलमहल के जूनी छतरी नामक कमरे में हुआ था।
- **पिता** – उदयसिंह
- **माता** – पाली के अखैराज सौनगरा की पुत्री जैवंता बाई थी।
- प्रताप को बचपन में किका के नाम से पुकारा जाता था। जिसका अर्थ साहसी बालक होता है। 1572 में उदयसिंह की मृत्यु गोगुन्दा (उदयपुर) में हुई थी। उदयसिंह ने अपनी पत्नी धीरबाई के कहने पर अपने पुत्र जगमाल को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया था।
- गोगुन्दा में उदयसिंह के दाह संस्कार से लौटते समय राजपूत सरदारों ने 28 फरवरी, 1572 को गोगुन्दा में महादेव बावड़ी के निकट महाराणा प्रताप का राज्याभिषेक कर दिया था। कृष्णदास चूंडावत के द्वारा प्रताप की कमर में तलवार बांधी गयी थी। इस अवसर पर ग्वालियर के शासक रामसिंह तोमर भी उपस्थित थे।
- कुम्भलगढ में महाराणा प्रताप का विधिवत रूप से राज्याभिषेक किया गया तथा इस अवसर पर जोधपुर के शासक चन्द्रसेन भी उपस्थित थे। इस घटना को राजमहलों कि क्रान्ति कहते है, क्योंकि राजपूत सरदारों द्वारा प्रथम बार उत्तराधिकार में हस्तक्षेप किया था। जगमाल अकबर के पास चला गया था। अकबर ने जगमाल को जहाजपुर/आँधी (भीलवाड़ा) की जागीर प्रदान की थी।
- अकबर ने प्रताप के पास चार शिष्टमंडल भेजे।
- जून–सितम्बर, 1572 जलाल खाँ कोरची
- मार्च–जुलाई, 1573 मानसिंह
- जेम्स टॉड के अनुसार मानसिंह व महाराणा प्रताप की मुलाकात उदयसागर की पाल पर हुई। जबकि अबुल फ़जल के अनुसार यह मुलाकात गोगुन्दा में हुई थी। सितम्बर 1573 भगवन्त दास अबुल फज़ल ने लिखा है कि इस समय प्रताप ने अकबर की अधिनता स्वीकार कर ली थी। बाद में प्रताप को पृथ्वीराज राठौड का इसी संदर्भ में पत्र प्राप्त हुआ।
- दिसम्बर 1573, टोडरमल को अकबर ने स्व–विवेक से राजपूत शासको के साथ संधि करने का अधिकार प्रदान किया था।
- **हल्दी घाटी का युद्ध** – 18 जून, 1576
- अकबर युद्ध की तैयारियों के लिए स्वयं अजमेर आया। अजमेर स्थित दौलत खाने या मैगजिन दुर्ग में अकबर ने युद्ध की व्यूह रचना बनाई थी। अकबर ने अपना सेनापति मानसिंह को नियुक्त किया। इस युद्ध में मानसिंह के हाथी का नाम **मर्दाना** था। अकबर ने मानसिंह के साथ अपना **सवाई नामक** हाथी भेजा था। इस युद्ध में मुगलों की ओर से लडने वाले अन्य हाथी **गजमुक्ता व गजप्रसाद** थे। अकबर ने आगरा से दूसरी सेना आसफ खाँ के नेतृत्व में भेजी थी। इस युद्ध का एकमात्र प्रत्यक्ष–दर्शी इतिहासकार आसफ खां की सेना के साथ बदायूँनी आया था।
- मानसिंह ने युद्ध के लिए मोलेला (राजसमंद) में पड़ाव लगाया। प्रताप ने अपनी भील सेना का नेतृत्व करने के लिए **पूंजा भील** को भेजा था। प्रताप का सेनापति **झाला मना** था। सेना के हरावल भाग का नेतृत्व हकीम खां सूरी के द्वारा किया गया। इस युद्ध में प्रताप के हाथियों के नाम **रामप्रसाद व लूणा** थे।
- प्रताप ने युद्ध के लिए लोहसिंग गाँव में पड़ाव लगाया था। इस कारण से हल्दी घाटी के युद्ध को लोहसिंग का युद्ध भी कहा जाता है।
- मेवाड़ का पहला उदारक हमीर सिसोदिया था।
- बलीच ग्राम में चेतक की समाधि स्थल है।

- मानसिंह की सेना के अग्रिम भाग/हरावल भाग का नेतृत्व **जगन्नाथ कछवाह** कर रहे थे।
- युद्ध का प्रारम्भ हकीम खां सूरी ने बिना प्रताप की सूचना मिले ही कर दिया था। इसे भी प्रताप की हार का एक कारण माना जाता है। इस कारण मानसिंह अपनी सेना को सुरक्षित पिछे हटाते हुए खमनौर तक ले गया था। मिहतर खाँ ने अकबर के आने की झूठी अफवाह फैला दी। जिस कारण से मानसिंह ने खमनौर से आक्रमण प्रारम्भ किया। इसीलिए अबुल–फज़ल ने हल्दी घाटी के युद्ध को खमनौर का युद्ध कहा है।
- खमनौर में हकीम खां सूरी युद्ध करते हुए मारा गया था।
- जिस स्थान पर मेवाड़ की सेनाए पराजित हुई वो पूरा स्थान खून से लाल हो गया था। इसी को रक्त तलाई कहा जाता है। बदायूँनी ने यहा अपनी दाडी को खून से लाल किया।
- रक्त तलाई में मानसिंह व प्रताप के बीच युद्ध हुआ था। मानसिंह के हाथी मर्दाना की सूड में लगे खंजर से चेतक घायल हो गया था। प्रताप के राजकीय चिह्न झाला बिदा को पहनाये गये। मेवाड की सेना इसके बाद गोगुन्दा पहुंची तथा 21 जून, 1576 को मानसिंह ने बाकी बची सेना को गोगुन्दा से पराजित किया था।
- गोपीनाथ शर्मा का मत है कि मानसिंह ने दोनो युद्ध 21 जून को विजित किये थे।
- आशीर्वाद लाल श्रीवास्तव का मत है कि दोनो युद्ध एक ही दिन विजित किये गये। लाल श्रीवास्तव ने युद्ध को बादशाह बाग व गोपीनाथ शर्मा ने अनिर्णायक युद्ध व जेम्स टॉड ने मेवाड की थर्मोपोली व प्रत्येक राजूत सैनिक को लियोनायड्स कहा है।
- अकबर को हल्दी घाटी युद्ध की सूचना मोहम्मद इब्राहीम खाँ के द्वारा दी गयी थी।
- अक्टूबर, 1576 में अकबर व भगवंत दास चित्तौड आये थे। अकबर ने उदयपुर का नाम बदलकर मोहम्मदाबाद रख दिया था। प्रताप के हाथी रामप्रसाद का नाम पीर प्रसाद रखा गया। इसके बाद अकबर ने अपने सेनापती शाहबाज खाँ को प्रताप के विरूद्ध भेजा था। शाहबाज खाँ ने 15 अक्टूबर, 1577 को प्रताप को कुंभलगढ़ के युद्ध में परास्त किया। कुंभलगढ का दुर्ग जीतने वाला एकमात्र मुस्लिम सेनापती शाहबाज खाँ ही था। इस युद्ध में प्रताप का सेनापती मान सोनगरा था। शाहबाज खाँ ने दिसम्बर 1578, अक्टूबर–नवम्बर 1579 में प्रताप को हराया था। महाराणा प्रताप की मुलाकात चूलिया (चित्तौड) में भामाशाह व उनके भाई ताराचंद से हुई थी। ढोलाण नामक गांव में इन्होने अपनी समस्त सम्पती महाराणा प्रताप को दान दे दी थी। भामाशाह को मेवाड का कर्ण व दूसरा उद्दारक कहा जताा है।
- 1581 में अकबर अब्दुल रहिम खाने खाना को प्रताप के विरूद्ध भेजा था। अक्टूबर 1582 में दिवेर (राजसंमद) का युद्ध लड़ा गया। इस युद्ध में प्रताप के पुत्र अमर सिंह ने मुगल सेनापति सेरीया सुल्तान खाँ की हत्या कर दी व मुगल सेना पराजित हुई। इस युद्ध को जेम्स टॉड ने मेवाड़ का मैराथन व प्रताप के गौरव का प्रतीक कहा है।
- 1584 में अकबर ने जगन्नाथ कछवाह के नेतृत्व में प्रताप के विरूद्ध अंतिम सैनिक अभियान भेजा था।
- **1585 में प्रताप ने चांवड (उदयपुर) को अपनी राजधानी बनाया।** यही पर 19 जनवरी, 1597 को महाराणा प्रताप की मृत्यु हुई। बाडौली में प्रताप का दाह संस्कार किया गया था। यही पर इनकी 8 खम्भो की छतरी स्थित है।
- अकबर को प्रताप की मृत्यु की सूचना दरसा आढा के द्वारा दी गई।
- प्रताप को मेवाड केसरी के नाम से भी जाना जाता है।

## महाराणा राजसिंह 1652–1680 एवं औरंगजेब

**राजसिंह का जन्म** – 24 सितम्बर, 1629 ई. उदयपुर में हुआ।
**पिता का नाम** – जगतसिंह
**माता का नाम** – जनादे कंवर मेड़तणी
**राजसिंह का राज्याभिषेक** – 10 अक्टूबर, 1652 (मेवाड़)

- महाराणा राजसिंह ने एकलिंगजी मन्दिर जाकर रत्नों का तुलादान किया था।
- शाहजहाँ के पुत्रों में उत्तराधिकार की लडाई शुरू होने पर राजसिंह ने इस अवसर का लाभ उठाकर मुगलों द्वारा जीते हुए इलाकों पर पुनः अधिकार करना शुरू कर दिया, **राजसिंह ने सर्वप्रथम मांडलगढ** पर सेना भेजी, जहाँ का शासन बादशाह ने किशनगढ के रूपसिंह को दे रखा था, किले का दुर्गाध्यक्ष राघवसिंह वहाँ से भाग गया व माण्डलगढ दुर्ग पर महाराणा राजसिंह का अधिकार हो गया।
- राजसिंह ने मुगल इलाको पर अधिकार करने के लिए राजकुल की टीकादौड परम्परा को माध्यम बनाया, जिसके अन्तर्गत महाराणा ने दरीबा, मांडल, बनेडा, शाहपुरा, जहाजपुर, सावर, फुलिया, केकडी आदि को अपने अधीन कर लिया।
- राजसिंह ने उत्तराधिकार युद्ध में औरंगजेब का सहयोग किया था। (मेवाड का प्रथम शासक जिन्होंने मुगलों का समर्थन किया था)
- औरंगजेब के जजिया कर के विरोध में राजसिंह ने उसको एक पत्र लिखा था जिसकी तीन प्रतियाँ प्राप्त होती है।
  1. रॉयल एशियाटिक सोसायटी लंदन के संग्रह में
  2. बंगाल एशियाटिक सोसायटी के संग्रह में
  3. उदयपुर राज्य के राजकीय दफ्तर में
- औरंगजेब ने राजसिंह द्वारा जजिया कर का विरोध करने पर क्रोधित होकर जोधपुर के शासक महाराजा जसवंत की मृत्यु निःसंतान होने पर मारवाड़ का राज्य खालसा घोषित करके मुगल साम्राज्य में मिला लिया।
- महाराजा जसवंत सिंह की रानी ने कुँवर अजित सिंह को जन्म दिया, औरंगजेब ने कूटनीति चाल चलकर कुँवर अजित सिंह को दिल्ली दरबार में लाने को कहा व फिर उनको कैद कर लिया।
- वीर दुर्गादास राठौड़ ने अपनी चालाकी से गोराधाय व बघेली की सहायता से अजित सिंह को औरंगजेब के चंगुल से मुक्त करवा लिया व दुर्गादास ने महाराणा राजसिंह से अजितसिंह को शरण देने व रक्षा करने के लिए अर्जी लिखी। महाराणा ने अजित सिंह को शरण दी तथा उनके पालन–पोषण के लिए केलवा की जागीर प्रदान की।

  **उपाधि** – हाइड्रोलिक रूलर (पानी की व्यवस्था करने के कारण)
  विजय कटकातु (बहुत सारे युद्ध जीतने के कारण)

## राव चन्द्रसेन (1562–1581) एवं अकबर

**राव चन्द्रसेन का जन्म** – 30 जुलाई, 1541
**पिता** – राव मालदेव
**राज्याभिषेक** – 31 दिसम्बर, 1562

राव मालदेव ने अपने बडे पुत्र रामसिंह व उदयसिंह के स्थान पर अपने छोटे पुत्र राव चन्द्रसेन को उत्तराधिकारी बनाया।

उदय सिंह (फलौदी की जागीर)
राम सिंह (गूँदोच की जागीर)
रायमल्ल (सिवाणा की जागीर)

- राव चन्द्रसेन के राज्यरोहण से असंतुष्ट सामन्तों ने चन्द्रसेन के भाइयों में कलह उत्पन्न करवा दी जिसका फायदा अकबर ने उठाया।

- रावचन्द्रसेन ने अपने भाई रायमल व रामसिंह को हराने के बाद उदयसिंह को भी लोहावट के युद्ध में हराया।
- रामसिंह नाराज होकर अकबर की शरण में चला जाता है।
- हुसैन कुली खाँ के नेतृत्व में मुगल सेना ने 1564 ई. में जोधपुर पर अधिकार कर लिया।

## अकबर का नागौर दरबार – 1570

- नागौर दरबार के दौरान अकबर ने दुष्काल से राहत दिलाने के लिए एक तालाब खुदवाया था जिसका नाम शुक्रतालाब रखा गया।
- अकबर द्वारा नागौर दरबार लगाने का उद्देश्य राजस्थान की राजनीतिक स्थिति का अध्ययन कर मुगल वर्चस्व का प्रचार–प्रसार करना था।
- नागौर दरबार में अकबर की सेवा में उपस्थित राजा निम्न थे :–
  1. रावल हरराज (जैसलमेर)
  2. राव कल्याणमल (बीकानेर) व उनके पुत्र रायसिंह
  3. उदयसिंह (राव चन्द्रसेन के बडे भाई)
- मारवाड की परतंत्रता में नागौर दरबार एक महत्वपूर्ण कडी साबित हुआ।
- 30 अक्टूबर, 1572 को बीकानेर के शासक राव रायसिंह को जोधपुर का शासक नियुक्त किया।
- चन्द्रसेन ने भद्राजुण से जाने के बाद सिवाणा को अपनी राजधानी बनाया तो शाही सेना कुली खाँ के नेतृत्व में सिवाणा पर आक्रमण किया तो राव चन्द्रसेन सिवाणा किले की रक्षा का भार अपने सेनापति राठौड फत्ता को सौंपकर स्वयं रामपुरा की पहाडियों में चला गया।
- सिवाणा आक्रमण के समय मुगल सेना के साथ निम्न शासकों ने भाग लिया था –
  1. बीकानेर के रायसिंह
  2. केशवदास मेडतिया
  3. जगतराय

## राव चन्द्रसेन पर आक्रमण

1574 ई. जलाल खाँ (असफल)
1576 ई. शाहबाज खाँ

- शाहबाज खाँ चन्द्रसेन को पकडने में असफल रहे, लेकिन उन्होंने सिवाणा के किले पर अधिकार कर लिया।
- सिवाणा गढ मुगलों द्वारा जीते जाने के बाद राव चन्द्रसेन का घूमन्तु जीवन शुरू हुआ जो इस प्रकार निकला–
  सिवाणा → पीपलोद → काणूजा (सोजत) → मेवाड → सिरोही → डूँगरपुर → बाँसवाडा (राजा प्रताप सिंह का आश्रय) → कोटडा (मेवाड)
- कोटड़ा मेवाड़ में राव चन्द्रसेन का मिलन महराणा प्रताप से हुआ।
- राव चन्द्रसेन ने 19 जुलाई, 1579 को सोजत पर अधिकार कर लिया लेकिन मुगल सेना के आने पर वे **सारण के पहाडी जंगलों** (सोजत) में चले गये।
- सारण की पहाडियाँ जहाँ राव चन्द्रसेन का अन्तिम संस्कार किया गया वहाँ राव चन्द्रसेन की घोड़े पर सवार मूर्ति बनी है। जिसके आगे 5 स्त्रियाँ खड़ी है, जिससे प्रमाणित होता है कि उनके पीछे 5 सती हुई थी।
- राव चन्द्रसेन मुगलो का प्रतिरोध करने में राजपूत शासकों के आदर्श कहे जा सकते है।
- राव चन्द्रसेन को मेवाड के राणा प्रताप का पथ प्रदर्शक कहा जाता है।
- राव चन्द्रसेन ऐसे प्रथम राजपूत शासक थे, जिन्होंने रणनीति में दुर्ग के स्थान पर जंगल और पहाडी क्षेत्र को ज्यादा महत्व दिया था।
- राव चन्द्रसेन ने खुले युद्ध के स्थान पर छापामार युद्ध प्रणाली का महत्व स्थापित करने वाले महाराणा उदयसिंह के बाद दूसरे शासक थे।

# आमेर के शासक मानसिंह (1589–1614)

- सर्वप्रथम 1562 ई. में राजपूतों ने मुगलों के साथ सहयोग की नीति अपनाई थी।
- आमेर के शासक भारमल ने अपनी पुत्री जोधाबाई या हरखा बाई की शादी अकबर से की जो बाद में मरियम उज्जमानी के नाम से प्रसिद्ध हुई।
- भारमल पहले कछवाह शासक थे जिन्होंने मुगलों से वैवाहिक संबंध स्थापित किया।
- मानसिंह का जन्म – 2 दिसम्बर, 1550 ई. (मौजमाबाद)।
- मानसिंह राजा भारमल के पौत्र व भगवन्तदास के पुत्र थे ।
- मानसिंह 1562 ई. से जीवन पर्यन्त मुगलों की सेवा में रहे, उन्होंने सेनानायक, सूबेदार, मनसबदार के रूप में मुगलों से जुडे रहे।
- मानसिंह अकबर के सर्वाधिक विश्वस्त सेनानायक थे।
- मानसिंह ने 1589 ई. में आमेर का शासन संभाला।
- 7000 सवार व जात का मनसब केवल मानसिंह व कोका अजीज को ही प्राप्त था।
- बादशाह द्वारा गुजरात विजय (1572 ई.) के बाद मानसिंह को वागड व मेवाड़ भेजकर मुगल अधिपत्य स्थापित करने का जिम्मा सौंपा।
- मानसिंह ने डूँगरपूर के शासक आसकरण व बाँसवाडा के शासक रावल प्रतापसिंह को अकबर की अधीनता स्वीकार कराई।

## मानसिंह व महाराण प्रताप का मिलन

जून, 1573 ई. में मानसिंह ने महाराणा प्रताप से मुलाकात की पर वे महाराणा प्रताप को संधि के लिए राजी करने में असफल रहे।

## हल्दीघाटी युद्ध

महाराणा प्रताप व मानसिंह का आमना–सामना हल्दीघाटी के पास रक्त तलाई नामक स्थान पर 21 जून, 1576 ई. को हुआ, जिसमें मानसिंह विजयी रहा। पर महाराणा प्रताप को पकडने में कामयाब नहीं हुए।

## मानसिंह के अन्य विजय अभियान

1. **उत्तरी–पश्चिम सीमान्त प्रान्त में विद्रोह का दमन** – मानसिंह ने 1580 ई. में उत्तरी–पश्चिम सीमा प्रान्त में अफगानों व रोशनियाओ के विद्रोह को शांत किया।
2. **काबुल विजय** – मिर्जा हकीम खाँ के विद्रोह को दबाने के लिए मानसिंह व भगवन्तदास के नेतृत्व में सेना भेजी। 1581 ई. में काबुल विजय की।
   - 1585 ई. में मानसिंह को काबुल का सूबेदार नियुक्त किया।
   - बिहार की सूबेदारी – (1587 ई.)
   - **उडीसा विजय –**
     मानसिंह ने 1592 ई. में उडीसा के अफगान शासक नासिर खाँ को पराजित किया।
   - बंगाल का सूबेदार – (1594 ई.)
   - 1596 ई. में कूचबिहार के शासक राजा लक्ष्मीनारायण को पराजित किया व उसकी बहिन अबलादेवी से विवाह किया।
   - पूर्वी बंगाल के राजा को पराजित किया तथा वहाँ से 1604 ई. में शिलामाता की मूर्ति ले आये व आमेर के महलो मे प्रतिष्ठित करवाया।

## अहमद नगर अभियान

जहाँगीर ने 1611 ई. में मानसिंह को अहमद नगर अभियान पर भेजा। वहीं पर एलिचपुर(महाराष्ट्र) में **17 जुलाई, 1614** ई. को राजा मानसिंह की मृत्यु हो गई।

- मानसिंह के समय रायमुरारीदास ने **मानचरित्र, मानप्रकाश** तथा जगन्नाथ ने **मानसिंह कीर्ति मुक्तावली** नामक ग्रंथों की रचना की।
- मानसिंह ने बैंकटपुर ॥ (पटना) में भवानी शंकर का मंदिर बनवाया था।
- मानसिंह के शासनकाल में संत दादू जी ने दादूवाणी की रचना की थी।
- मानसिंह के बाद आमेर का शासक मिर्जा राजा भावसिंह 1614 ई. में बना।
- आमेर मे इनकी रानी कनकावतीजी ने अपने पुत्र जगतसिंह का स्मृति मे जगत शिरोमणि मंदिर का निर्माण करवाया।

## बीकानेर के राजा रायसिंह (1574–1612 ई.)

**महाराजा रायसिंह का जन्म** – 20 जुलाई, 1541 ई. (बीकानेर)
**पिता** – कल्याणमल
**राज्याभिषेक** – 1574
**उपाधि** – महाराजा, महाराजाधिराज

- रायसिंह के पिता कल्याणमल ने अकबर के नागौर दरबार में अपने पुत्र पृथ्वीराज व रायसिंह सहित बादशाह की सेवा में उपस्थित होकर मुगलों की अधीनता स्वीकार की थी।

**नोट**– कल्याणमल अकबर की अधीनता स्वीकार करने वाले बीकानेर के प्रथम शासक थे।

### कठोली का युद्ध – (1573 ई.)
रायसिंह के नेतृत्व में इब्राहिम हुसैन मिर्जा का दमन किया गया था।

### सिवाणा पर अधिकार – (1574 ई. में)
रायसिंह ने 1574 ई. में सिवाणा दुर्ग पर अधिकार किया, जिसमें शाहबाज खाँ भी साथ थे।

### देवड़ा सुरताण का दमन – (1576 ई.)
- सिरोही के देवडा सुरताण के विद्रोह का दमन कर अकबर की अधीनता स्वीकार करने पर मजबूर किया।
- रायसिंह ने 1577 ई. में आबू के किले पर अधिकार कर लिया।

### रायसिंह का गुजरात अभियान
गुजरात में मिर्जा बंधुओं के विद्रोह को कुचलने के लिए अकबर के साथ अभियान पर गए। इस अभियान में रायसिंह ने **हुसैन मिर्जा** को मौत के घाट उतार दिया था इससे अकबर बडा प्रभावित हुआ।

### काबुल अभियान – (1581 ई.)
अकबर के सौतेले भाई हकीम मिर्जा को हराया।

### रायसिंह प्रशस्ति
- रचयिता – जइता
- भाषा – संस्कृत
- रायसिंह प्रशस्ति में राव बीका से लेकर राय सिंह तक के शासकों का वर्णन है।
- जूनागढ के प्रवेश द्वार कर्णपोल व सूरजपोल है।
- सूरजपोल के पास जयमल मेडतिया व फत्ता सिसोदिया की मूर्तियां स्थापित है।

### जूनागढ दूर्ग में स्थित इमारत
फूलमहल, चन्द्रमहल, गज मंदिर, रत्न मंदिर, छत्रमहल आदि है।

- जहाँगीर ने रायसिंह का मनसब 4000 से बढाकर 5000 कर दिया।

- 22 जनवरी 1612 ई. को रायसिंह का बुरहानपुर मे देहान्त हो गया।
- अकबर ने रायसिंह को जूनागढ, नागौर, शम्साबाद जैसी महत्वपूर्ण जागीर प्रदान की थी।
- कर्मचन्द्रवंशोत्कीर्तनकं काव्य में रायसिंह को राजेन्द्र कहा गया है।
- रायसिंह के शासनकाल में जैन साधु ज्ञान विमल ने महेश्वर के (शब्दभेद) की टीका को पूर्ण किया था।
- रायसिंह ने रायसिंह महोत्सव, ज्योतिष रत्नाकर (रत्नमाला) नामक दो ग्रंथ लिखे थे। इसके अलावा बाल–बोधिनी व वैधक वंशावली की रचना भी रायसिंह ने की थी।